ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

अफसाना बेगम को मिली उन्नति की राह
(पृष्ठ – 02)

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बदली दिशा
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बनाया सशक्त
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – अक्टूबर 2025 ।। अंक – 51

गरीबी से समृद्धि की ओरः बिहार से केन्या की सीख

बिहार सरकार की महत्वपूर्ण एवं जीविका द्वारा संचालित सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर देशी शराब एवं ताड़ी के उत्पादन एवं बिक्री में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े अत्यंत निर्धन परिवार तथा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य समुदायों के लक्षित अत्यंत निर्धन परिवार अब आत्मसम्मान के साथ रोजगार कर रहे हैं। गरीब परिवार अब आर्थिक स्वावलंबन के साथ ही समाज में मान–सम्मान भी पा रहे हैं और उनकी सफलता की सुगंध देश–विदेश तक फैली है।

गौरतलब है कि इमर्शन एंड लर्निंग एक्सचेंज (ILE)कार्यक्रम जीविका, ब्राक इंटरनेशनल और बंधन कोननगर के द्वारा संयुक्त रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है, जिसके माध्यम से विभिन्न देशों और भारत के अन्य राज्य से प्रतिनिधि "सतत् जीविकोपार्जन योजना" के तहत हो रहे कार्यों को देखने और गरीबी उन्मूलन के बारे में सीखने हेतु इमर्शन एंड लर्निंग केन्द्रों का दौरा करते हैं। इसके तहत बिहार सरकार की प्रमुख योजनाओं में से एक "सतत् जीविकोपार्जन योजना" की प्रक्रिया, पहुँच और प्रभाव के विस्तार पर जोर दिया जाता है । अबतक कार्यक्रम के तहत इंडोनेशिया, फिलीपींस, दक्षिण अफ्रीका, इथियोपिया, श्रीलंका एवं केन्या के प्रतिनिधियों ने सतत् जीविकोपार्जन योजना के बारे में जानने और अपने–अपने देशों में इसी तरह के कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिए बिहार का दौरा किया गया है।

केन्या सरकार हाल के वर्षों में अत्यंत गरीब परिवारों के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में ठोस प्रयास कर रही है। इस दिशा में Kenya Social and Economic Inclusion Project के तहत Ultra&Poor Graduation (UPG) मॉडल लागू किया गया है, जिसे विश्व बैंक और एफसीडीओ का सहयोग प्राप्त है। इसके पहले चरण में पाँच काउंटियों में 7,500 अत्यंत गरीब परिवारों को आजीविका और सामाजिक सुरक्षा के अवसरों से जोड़ा गया है।

इस कार्यक्रम के विस्तार और स्थानीय शासन तंत्र में उसके संस्थागत एकीकरण के लिए, केन्या सरकार का 13 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल, जिसमें एक काउंटी गवर्नर भी शामिल थे, 18 से 21 अगस्त 2025 के दौरान बिहार के नालंदा जिले का दौरा किया गया ।

इस अध्ययन यात्रा का उद्देश्य बिहार सरकार द्वारा अत्यंत गरीब परिवारों के उत्थान हेतु अपनाए गए ग्रेजुएशन आधारित मॉडल को समझना था। प्रतिनिधिमंडल ने नालंदा जिले में विभिन्न परिवारों और समुदायों से बातचीत की, जिन्होंने सतत् जीविकोपार्जन योजना एवं जीविका के सहयोग से गरीबी की रेखा से ऊपर उठकर स्थायी जीविकोपार्जन के साधन को अपनाया है । केन्या के अधिकारियों ने उन परिवारों से संवाद किया जो छोटे दुकानों, डेयरी, बकरी पालन, सिलाई और अन्य सूक्ष्म उद्यमों के माध्यम से आत्मनिर्भर बन चुके हैं। उन्होंने देखा कि किस प्रकार बिहार की ग्रामीण महिलाएँ अब डिजिटल भुगतान (यूपीआई) का उपयोग कर रही हैं, बचत और निवेश की आदतें विकसित कर चुकी हैं, और अपने बच्चों की शिक्षा एवं परिवार की समृद्धि के लिए योजनाबद्ध रूप से कार्य कर रही हैं।

प्रतिनिधिमंडल ने यह भी अनुभव किया कि "सतत् जीविकोपार्जन योजना" केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक संपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन चुकी है। जब केन्या टीम ने जीविका के संकुल स्तरीय संघ की महिलाओं से बातचीत की, तो उन्हें ज्ञात हुआ कि ये संस्थाएँ न केवल कार्यक्रम की निगरानी करती हैं, बल्कि पारदर्शी चयन प्रक्रिया, धन प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने बताया कि "दीदी अधिकार केंद्र" जैसे मंचों ने ग्रामीण महिलाओं को सरकारी योजनाओं, वित्तीय संस्थानों और बाजार से जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रतिनिधिमंडल ने यह देखा कि बिहार की महिलाएँ अब केवल अपने परिवार की आर्थिक रीढ़ नहीं हैं, बल्कि वे अन्य गरीब परिवारों के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत भी बनी हैं। इस यात्रा ने केन्या टीम को यह समझने में मदद की कि बिहार में गरीबी उन्मूलन का यह मॉडल किस प्रकार सामुदायिक सशक्तीकरण, संस्थागत मजबूती और तकनीकी नवाचार के माध्यम से सकारात्मक बदलाव ला रहा है।

इस दौरे ने दोनों देशों के बीच अनुभव साझाकरण, तकनीकी सहयोग और पारस्परिक सीख की नई संभावनाएँ खोली हैं, जिससे वैश्विक स्तर पर 'ग्रेजुएशन एप्रोच' को सुदृढ़ और अधिक प्रभावी रूप से लागू किया जा सकेगा।

अफसाना बेगम को मिली उन्नति की राह

अफसाना बेगम, ग्राम हल्दी खोरा चंदवार, पंचायत भौरदाह, प्रखंड बहादुरगंज, जिला किशनगंज की रहने वाली हैं। वह काजल जीविका स्वयं सहायता समूह, तराना जीविका महिला ग्राम संगठन और प्रयास जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ से जुड़ी हुई हैं। अफसाना बेगम का जीवन शुरू से ही संघर्षों से भरा रहा। कम उम्र में उनकी शादी रफीक आलम से हो गई थी। शुरुआती दिनों में उनका पारिवारिक जीवन ठीक–ठाक चल रहा था, लेकिन समय के साथ परिस्थितियाँ बदल गईं। दो बेटियों के जन्म के बाद उनके पति ने परिवार को छोड़ दिया। इसके बाद अफसाना बेगम को अकेले ही जीवन की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। एक समय ऐसा आया जब उन्हें अपने और बच्चों के लिए दो वक्त की रोटी और कपड़े जुटाना भी मुश्किल हो गया।

इसी विषम परिस्थिति में उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना (एस.जे.वाई.) का सहारा मिला। तराना जीविका महिला ग्राम संगठन की मदद से उन्हें 37 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्राप्त हुई। इस राशि से अफसाना बेगम ने एक किराना दुकान शुरू की। धीरे–धीरे उनका कारोबार चल निकला और आमदनी बढ़ने लगी। किराना दुकान से हुई कमाई से उन्होंने पशुपालन की ओर भी कदम बढ़ाया। आज उनके पास छह बकरियाँ और एक गाय है। दूध और पाठा–पाठी की बिक्री से उन्हें अतिरिक्त आमदनी होने लगी है। साथ ही उन्होंने खेती भी करना शुरू किया।

किराना दुकान, खेती और पशुपालन की आय से अफसाना बेगम ने न केवल अपना घर बनाया बल्कि भविष्य के लिए बैंक में बचत भी शुरू की। वर्तमान में उन्हें हर महीने सात से आठ हजार रुपये की आय हो रही है। वे अपने बच्चों को पढ़ा रही हैं और उनके बेहतर भविष्य की नींव रख रही हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना ने अफसाना बेगम को जीवन की कठिनाइयों से उबरने का अवसर दिया और उन्हें आत्मनिर्भर बनने की राह दिखाई।

संघर्ष से स्वावलंबन का सफर

विनीता देवी, पंचायत पड़िया कुसमार, प्रखंड बरियारपुर, जिला मुंगेर की रहने वाली हैं। वह जूही जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं और आशा जीविका महिला ग्राम संगठन तथा अर्पण जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ की भी सक्रिय सदस्य हैं। उनके पति जयराम पासवान दिव्यांग हैं, जिसके कारण वे किसी भी प्रकार का रोजगार करने में सक्षम नहीं हैं। चार बेटियों की परवरिश और घर की सारी जिम्मेदारी विनीता देवी पर ही आ गई। मजदूरी और दूसरों के घरों में छोटे–मोटे काम करके वे किसी तरह बच्चों का पालन–पोषण करती थीं। परंतु आमदनी इतनी कम थी कि बच्चों की पढ़ाई और घर का खर्च दोनों ही मुश्किल से पूरे हो पाते थे। कई बार उन्हें कर्ज भी लेना पड़ता था।

ऐसे कठिन हालात में वर्ष 2016 में जब प्रखंड में सतत् जीविकोपार्जन योजना का कार्य शुरू हुआ, तो ग्राम संगठन के माध्यम से अत्यंत गरीब परिवारों की पहचान की जा रही थी। इस दौरान विनीता देवी की परिस्थिति को देखते हुए उनका चयन इस योजना के अंतर्गत किया गया। उन्हें प्रशिक्षण दिया गया और अपने हुनर तथा स्थानीय मांग को ध्यान में रखते हुए उन्होंने बरियारपुर बाजार में सब्जी की दुकान खोलने का निश्चय किया। योजना के तहत उन्हें सबसे पहले 10,000 रुपये की सहायता राशि मिली, जिससे उन्होंने एक सब्जी बेचने हेतु ठेला तैयार कराया। इसके बाद जीविकोपार्जन निवेश निधि से उन्हें 20,000 रुपये की अतिरिक्त सहायता दी गई। इस धन राशि से उन्होंने थोक बाजार से ताज़ी सब्ज़ियाँ खरीदीं और ठेले पर बेचना शुरू किया।

शुरुआत में ग्राहकों की संख्या कम थी, लेकिन विनीता देवी का व्यवहार, ईमानदारी और उचित दाम पर ताज़ी सब्ज़ियाँ उपलब्ध कराने की वजह से उनकी पहचान बनने लगी। धीरे–धीरे उनकी दुकान पर ग्राहकों की भीड़ बढ़ी और उन्हें नियमित आय होने लगी। आज विनीता देवी अपनी सब्जी दुकान से अच्छी आमदनी कर रही हैं। उनकी चारों बेटियाँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं और परिवार अब मजदूरी या कर्ज पर निर्भर नहीं है। पति की दिव्यांगता के बावजूद उन्होंने अपनी मेहनत और जीविका के सहयोग से परिवार को आत्मनिर्भर बना दिया है।

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक: बबीता देवी की प्रेरक कहानी

बबीता देवी, पति मनोज खबरदार, ग्राम धुपदेवघाट, पंचायत पुरसंडा, प्रखंड ई. अलीगंज, जिला जमुई की रहने वाली हैं। वह रोशनी स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। बबीता देवी का जीवन जीविका से जुड़ने से पहले बेहद कठिनाइयों से भरा हुआ था। उनके तीन बच्चे हैं, जिसमें दो बेटियाँ और एक बेटा हैं। इतनी गरीबी थी कि कई बार एक समय का भोजन जुटाना भी मुश्किल हो जाता था। बीमारियों और आर्थिक तंगी ने उनके जीवन को और भी कष्टदायी बना दिया था। उस दौर में परिवार जंगल से लकड़ी काटकर शहर में बेचकर किसी तरह गुजारा करता था।

इसी बीच गाँव में जीविका की दीदियों ने समूह बनाने की पहल की। बबीता देवी ने भी अपनी गरीबी और संघर्ष की कहानी जीविका मित्र के साथ साझा की। उनकी बातें सुनकर जीविका मित्र भावुक हो गई और उन्हें समूह से जुड़ने की सलाह दी। बबीता देवी समूह में शामिल हो गई।

इस बीच उनके दयनीय स्थिति को देखते हुए उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में हुआ। इस योजना से प्राप्त सहायता राशि से एक किराना दुकान की शुरुवात की। अब उनकी किराना दुकान अच्छी तरह से चल रही है, घर का खर्च सुचारु रूप से चल रहा है और बच्चों की पढ़ाई भी हो रही है।

बबीता देवी कहती हैं कि गरीबी का सामना धैर्य और साहस से करना चाहिए। वे मानती हैं कि जीविका के सहयोग और अपने संघर्ष से ही आज वे आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन जी पा रही हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बदली दिशा

खगड़िया जिला, चौथम प्रखंड की रहने वाली सविता दीदी का जीवन कभी बेहद कठिनाइयों से घिरा हुआ था। उनके पति अजय कुमार यादव की असामयिक मृत्यु के बाद वह अकेले ही अपनी दो बेटियों का पालन–पोषण करने लगीं। अचानक हुए इस दुखद हादसे ने उनका जीवन अस्त–व्यस्त कर दिया। सविता दीदी का परिवार इतना निर्धन था कि कभी उन्हें भोजन नसीब होता और कभी भूखे पेट ही रात गुजारनी पड़ती थी। ऐसी विषम स्थिति को देखते हुए वर्ष 2019 में उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत किया गया और उन्हें राधा जीविका स्वयं सहायता समूह से भी जोड़ा गया, जो महिमा जीविका महिला ग्राम संगठन के अंतर्गत आता है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ने के बाद सविता दीदी के जीवन में धीरे–धीरे बदलाव आने लगा। शुरुआत में ग्राम संगठन से उन्हें बकरी पालन के लिए बकरी उपलब्ध कराई गई। इससे उन्हें आय का एक छोटा लेकिन स्थायी साधन मिला। धीरे–धीरे उन्होंने मेहनत और बचत के पैसो से एक गाय भी खरीदी। गाय पालन से उनकी आमदनी दोगुनी हो गई और परिवार की स्थिति में सुधार होने लगा। इसके साथ ही उन्होंने एक किराना दुकान भी खोली, जिससे उनकी आय में और अधिक वृद्धि हुई।

आज सविता दीदी की गिनती मेहनती और आत्मनिर्भर महिलाओं में की जाती है। वह अब केवल किराना दुकान और पशुपालन से ही नहीं जुड़ी हैं, बल्कि विधवा पेंशन योजना, उज्ज्वला योजना, राशन कार्ड और नल–जल योजना जैसी अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ भी उठा रही हैं जिससे उनके जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

सविता दीदी बताती है कि सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उन्हें नई दिशा दी और कठिन परिस्थितियों से निकलकर आत्मनिर्भर बनने का हौसला दिया। उनकी कहानी इस बात का प्रमाण है कि संघर्ष और संकल्प से जीवन की हर चुनौती पर विजय पाई जा सकती है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बनाया सशक्त – लखीसराय

बिहार सरकार की पहल एवं जीविका द्वारा संचालित सतत् जीविकोपार्जन योजना ने अत्यंत गरीब परिवार को आर्थिक एवं सामाजिक तौर पर सशक्त बनाया है। कल तक खेतों में मजदूरी करने वाली अत्यंत निर्धन परिवार की महिलाएँ अब अपनी दुकान की मालकिन हैं और महिला सशक्तीकरण की मिसाल कायम कर रही हैं। उन्ही में से एक हैं सबिता देवी। लखीसराय जिले की सबीता देवी के घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहती थी। वो खेतों में मजदूरी करते हुए अपने पति का इलाज़ एवं बच्चों का पालन–पोषण मुश्किल से कर पाती थी। कभी–कभी तो बच्चों के लिए खाना दूसरों से मांग कर लाना पड़ता था। सबीता के पति नशे के आदी थे लिहाजा वो बीमार भी रहते थे । वह अपने पति का इलाज़ महाजन से ऋण लेकर करा रही थी। गरीबी का दंश, साहूकार का शोषण और बच्चों को भोजन उपलब्ध करने की समस्या से परेशान सबीता मानसिक तौर पर परेशान रहने लगी। ऐसे में उन्हें जीविका दीदियों का सहारा मिला।

जीविका से जुड़ी महिलाओं ने अपने समूह की बैठक में सबिता की माली हालात को देखते हुए सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभ देने के लिए इनके नाम का वर्ष 2020 में बगवान जीविका महिला ग्राम संगठन में किया। इन्हें रहीम जीविका महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्यता दिलाई गई। सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत इन्हें लाभ देने के लिए स्वरोजगार करने हेतु प्रेरित किया गया। इन्होने किराना दुकान खोलने हेतु अपनी रूचि दिखाई। इनके रूचि के अनुरूप इन्हें अगस्त 2020 में किराना दुकान के लिए जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत 20 हजार रुपये का सामान एवं विशेष निवेश निधि के तहत दुकान निर्माण हेतु 10 हजार रुपये की राशि मिली। साथ ही सात माह तक एक–एक हजार रूपया जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि भी दी गयी। इन्होंने मजदूरी छोड़कर किराना दुकान का संचालन शुरू किया। दुकान से हुए मुनाफे से इन्होने साहूकार से लिए गए कर्ज को चुकाया। पूर्व में महाजन से लिए हुए कर्ज को भी चुकाया। इसी बीच जीविकोपार्जन निवेश निधि की दूसरी क़िस्त की राशि के तौर पर इन्हें पुनः 33 हजार रूपया मिला। इस राशि से इन्होंने बकरी पालन का कार्य भी शुरू किया। बकरी बेचकर हुए मुनाफे से उन्होंने सिलाई मशीन खरीद कर सिलाई केंद्र भी प्रारंभ किया और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया। अब इनकी कुल परिसंपत्ति 1 लाख 53 हजार रुपये से अधिक है।

तीनों व्यवसाय से उन्हें प्रतिमाह 8 से 10 हजार रूपये प्रतिमाह मुनाफ़ा हो रहा है। उनके जीवन में खुशहाली आई है। उनके बच्चे पढ़ने के लिए स्कूल जाते हैं। इनका राशन कार्ड, बी.पी.एल कार्ड, आयुष्मान कार्ड बन गया है और इंदिरा आवास योजना के तहत आवास का लाभ भी मिला है। अपने बीमार पति का भी वो इलाज़ अच्छे से करा रही हैं और सबसे बड़ी बात की अपनी पत्नी की तरक्की को देखकर इनके पति ने नशा करना भी बंद कर दिया है। इनकी पहचान अब एक कुशल व्यवसायी और लखपति दीदी के तौर पर हो रही है। सबीता दीदी बहुत मेहनत के साथ रोजगार करने लगी हैं और समय निकालकर खेती का काम भी करने लगी हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार